B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Metternich System (PPT)

B.A. Part-1

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

मेटरनिख व्यवस्था

परिचय

❖नेपोलियन के पतन के पश्चात यूरोप के राजनीतिक मंच पर जिस महान नेता का आगमन हुआ, विश्व उसे मेटरनिख के नाम से जानता है। यह राजनेता जब तक ऑस्ट्रिया का चांसलर रहा, तब तक वह प्रतिक्रियावादी नीति का अनुशीलन कर यूरोपीय देशों पर अपना प्रभाव कायम करता रहा। 1815 ई. से लेकर 1848 ई. तक उसने यूरोप की राजनीति को अपनी मनोनुकूल संचालन करने का प्रयास किया।

❖मेटरनिख ने ऑस्ट्रिया तथा सम्पूर्ण यूरोप में पुरातन व्यवस्था तथा यथास्थिति कायम रखना चाहता था इसके लिए उन्होंने 1815 ई. से लेकर 1848 ई. तक जिस व्यवस्था को अपनाए रखा उसे ही मेटरनिख व्यवस्था कहा जाता है है।

❖वह ऑस्ट्रिया में उदारवादी सिद्धांतों के प्रवेश का कट्टर विरोधी था और संपूर्ण यूरोप को फ्रांस की क्रांति से उत्पन्न उदारवादी विचारों से दूर रखना चाहता था। अपने प्रयासों से उसने व्यक्तियों एवं घटनाओं पर इस प्रकार से नियंत्रण किया की मध्य यूरोप में ऑस्ट्रिया की प्रभुसत्ता स्थापित हो गई। जर्मनी और उत्तरी इटली पर ऑस्ट्रिया का आधिपत्य स्थापित हुआ। इटली के अन्य छोटे-छोटे राज्य भी या तो ऑस्ट्रिया के नियंत्रण में थे अथवा प्रभाव में आ गए।

मेटरनिख व्यवस्था अपनाने के कारण

- 1815 ई. के बाद मेटरनिख की संपूर्ण कूटनीतिक शक्ति वियना व्यवस्था की सुरक्षा को बनाए रखने में लगी रही। वह यह भली-भांति जानता था कि यूरोप के विभिन्न भागों में फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर राष्ट्रीय तथा उदारवादी दल मौजूद थे। इन सब आंदोलनों का उद्देश्य शासकों को उदारवादी संविधान लागू करने को बाध्य करना था।
- ऑस्ट्रिया के अधीन प्रदेशों में विशेष रूप से जर्मनी और इटली के राज्यों में क्रांतिकारी विचारधारा प्रबल हो रही थी। इन राज्यों में मेटरनिख ने उदारवादी संविधान जारी नहीं किए थे, क्योंकि वह उदारवादी आंदोलनों का कट्टर विरोधी था।
- जर्मन राज्यों में उदारवादी शासन एवं जर्मन एकता के पक्ष में बुद्धिजीवियों का आंदोलन आरंभ हो गया था। रूस के जार तथा उसकी उदारवादी शासन एवं जर्मन एकता के पक्ष में बुद्धिजीवियों का आंदोलन आरंभ हो गया था।
- रूस के जार तथा उसकी उदारवादी विदेश नीति के परामर्शदाता केपी डिस्ट्रियाज ने सैक्स वीकर, बेडन और बवेरिया के शासकों को प्रभावित कर उनसे उदार संविधान जारी करवाए थे।

मेटरनिख व्यवस्था अपनाने के कारण-1

- प्रशा के चांसलर ने रुसी प्रभाव के कारण ही वहां के शासक फ्रेडरिक विलियम तृतीय को उदारवादी संविधान लागू करने के लिए प्रेरित किया था। इटली में गुप्त संस्था 'कार्बोनरी' के नेतृत्व में उदारवादी क्रांतिकारी आंदोलन आरंभ हो चुका था। नेपल्स, सिसली में उदारवादी आंदोलन 1818-1819 ई. से पूर्व ही शक्तिशाली हो चुका था।
- मेटरनिख पूर्ण रूप से इन आंदोलनों को दबाना चाहता था, क्योंकि वह जानता था कि ऑस्ट्रिया साम्राज्य अनेक जातियों से मिलकर बना है। एक राष्ट्रीय संविधान को जारी करने का अर्थ ऑस्ट्रिया साम्राज्य की मृत्यु थी। ऑस्ट्रिया साम्राज्य की सुरक्षा के लिए उसने विशेष पद्धति चलाई और सारे प्रगतिशील तत्वों का नष्ट करना आरंभ किया।
- मेटरनिख का युग दो धाराओं से होकर गुजर रहा था- प्रतिक्रियावादी धारा और उदारवादी धारा। मेटरनिख पहली विचारधारा का समर्थक था और उदारवादी विचारधारा का विरोधी था। प्रतिक्रियावादी भावना से अभिभूत होने के कारण वह राष्ट्रीयता का कट्टर विरोधी हो गया था।

मेटरनिख व्यवस्था अपनाने के कारण-2

- फ्रांसीसी क्रांति और उससे उत्पन्न समानता, स्वतंत्रता और भातृत्व की भावनाओं से घृणा करना ही उसका उद्देश्य तथा उसके चिंतन का सार था। वह क्रांति की तुलना एक छुआछूत वाले रोग से किया करता था, जिसकी रोकथाम के लिए इलाज की आवश्यकता थी। उसके अनुसार क्रांति एक रोग है, जिसका उपचार होना चाहिए।
- उसकी निरंकुश राजतंत्र में आस्था थी और समझता था कि वह ईश्वर का सेवक है जिसे राजतंत्र के रक्षा करने के लिए उसने पैदा किया है। उसका विचार यह था कि प्रजातंत्र दुख एवं दरिद्रता का पोषक है।
- उसका विचार था कि स्वतंत्रता, समानता और संविधानों की यह बात एक महामारी है और फ्रांस के क्रांतिकारी मस्तिष्क की घृणित बकवास है। संक्षेप में विद्यमान व्यवस्था को कायम रखना ही उसके जीवन का उद्देश्य था।

मेटरनिख की नीति

- मेटरनिख की नीति थी- क्रांति का दमन करना, राष्ट्रीयता एवं अन्य प्रगतिशील सिद्धांतों का उन्मूलन करना। इसके पीछे उसका स्वार्थ था, अपने देश का कल्याण करना। ऑस्ट्रिया के साम्राज्य की रक्षा करना वह अपना परम कर्तव्य मानता था। वह यह भली-भांति जानता था कि यदि राष्ट्रीयता का प्रसार, क्रांतिकारी भावनाओं का विकास और प्रजातंत्र का फैलाव उसके देश के साम्राज्य में हो जाएगा तो कोई भी शक्ति उसका विघटन होने से रोक नहीं सकती और सारा साम्राज्य अनेक टुकड़ों में खंडित हो सकता है।
- ऑस्ट्रियन साम्राज्य में अनेक जाति के लोग निवास करते थे और उनकी भाषा, रहन सहन, संस्कृति आदि में विभिन्नता थी। वियना के आस-पास जर्मनी, दक्षिण प्रदेश में स्लाव, ऑस्ट्रिया और रूस की मिली-जुली सीमा पर पोल, बोहेमिया में चेक, हंगरी में मगयार, रोमानियन और सर्बियन आदि जातियां निवास करती थी। राष्ट्रीय भावनाओं से उद्वेलित होकर इन प्रदेशों की जातियां विद्रोह कर सकती थी और स्वतंत्र सरकार कायम कर ऑस्ट्रिया के साम्राज्य से अलग हो सकती थी।
- अतः राष्ट्रीयता के फैलाव पर साम्राज्य का विघटन निर्भर करता था। मेटरनिख इस तथ्य को समझता था और यही कारण था कि उसने सारे प्रगतिशील सिद्धांतों का विरोध करना आरंभ किया। अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए उसने एक ऐसी पद्धति चलायी, जिसका उद्देश्य क्रांति तथा उससे उत्पन्न स्वतंत्रता तथा समानता के सिद्धांतों को प्रचारित होने से रोकना था।

मेटरनिख व्यवस्था के रूप

मेटरनिख व्यवस्था के दो रूप थे- 1.ऑस्ट्रिया तथा यूरोप के अन्य देशों में विभिन्न तरीके अपनाकर क्रांति की संभावनाओं को रोकना। 2.यथास्थिति कायम रखना अर्थात पुरातन व्यवस्था को कायम रखना।

- इस व्यवस्था के आधार पर मेटरनिख ऑस्ट्रिया तथा यूरोप के अन्य देशों में कुछ तरीके अपनाकर क्रांति की संभावनाओं को रोकना चाहता था। इसलिए उसने 'यूरोपीय व्यवस्था' कायम की। वह अपने मित्र देशों की सहायता से यूरोप के देशों में उठती हुई क्रांति की आग बुझाना चाहता था।
- अपने देश में क्रांति का दमन करने के लिए उसने एक सिद्धांत निकाला- 'शासन करो, परिवर्तन बिल्कुल नहीं लाओ।' शासन करने के लिए उसने फूट डालने की ही नीति को अपनाया और अपने साम्राज्य में निवास करने वाली जातियों को आपस में लड़ा दिया। क्रोट को इटली एवं इटालियनों को गैलेशिया भेज कर उसने उस फूट एवं झगड़े को और भी गति प्रदान की।
- यथास्थिति कायम रखना मेटरनिख व्यवस्था का दूसरा रूप था। पुरातन व्यवस्था में वह किसी भी प्रकार का परिवर्तन लाने का विरोधी था। यथास्थिति को कायम रखने के लिए उसने ऑस्ट्रिया के समाचार पत्रों, विद्यालयों, शिक्षकों, पदाधिकारियों इत्यादि पर कठोर नियंत्रण कायम किया।

अन्य देशों में मेटरनिख व्यवस्था

- मेटरनिख के नेतृत्व में नेपोलियन के उपरांत प्रजातांत्रिक विचारधारा के विरुद्ध एक शक्तिशाली प्रतिक्रियावादी विचारधारा का आगमन हुआ। मेटरनिख ने क्रांतिकारी भावनाओं को रोकने के लिए एवं यथास्थिति कायम करने के लिए केवल ऑस्ट्रिया को ही अपना केंद्र स्थल नहीं बनाया बल्कि अनेक यूरोपीय देश उनके प्रयोग स्थल बने। 1815 ई. से लेकर 1848 ई. तक उसने राष्ट्रीय विचारों एवं क्रांति की रोकथाम में अपने को संलग्न रखा। उसकी वैदेशिक नीति का मूल मंत्र था पुरातन व्यवस्था को कायम रखने के लिए क्रांति का दमन करना।
- नेपोलियन के पतन के पश्चात फ्रांस तथा यूरोप की समस्याओं पर विचार करने के लिए ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में कांग्रेस का आयोजन किया गया था। कांग्रेस में जितने भी देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, उनमें मेटरनिख सर्वाधिक प्रभावशाली था। कांग्रेस के सभी निर्णय उसकी प्रतिभा एवं व्यक्तित्व से अनुप्राणित हुए थे।
- कांग्रेस के सारे सिद्धांतों का निर्माण मेटरनिख ने स्वयं किया था और उन्हीं सिद्धांतों के आधार पर सारे निर्णय किए गए थे। उसी के प्रयास से फ्रांस, हॉलैंड, स्पेन, नेपल्स इत्यादि देशों के शासन उनके पुराने शासकों अथवा उत्तराधिकारियों को वापस कर दिए गए।

अन्य देशों में मेटरनिख व्यवस्था-1

- हॉलैंड और बेल्जियम को मिलाकर, 'जर्मन राइन संघ' को नष्ट कर, इटली का अंग भंग कर, पोलैंड को छिन्न-भिन्न कर उसने राष्ट्रीयता का प्रवेश रोक दिया। यूरोपीय व्यवस्था का निर्माण करके उसने विभिन्न देशों के घरेलू मामलों में भी हस्तक्षेप किया और सेना की सहायता से उनकी क्रांतियों का दमन कर दिया।
- अपने मित्र देशों की सहायता से उसने जर्मनी के समाचार पत्रों पर रोक लगा दी, जर्मन छात्रों द्वारा संगठित की जाने वाली सभाओं पर नियंत्रण रखने के लिए 'कार्ल्सवाद' की घोषणा की। जब छात्रों ने इस घोषणा का विरोध किया, तब अपने मित्र राष्ट्रों से सहायता लेकर मेटरनिख ने उन्हें कुचल डाला। इसी प्रकार स्पेन, पुर्तगाल, इटली और ग्रीस के विद्रोहों को कुचलने में मेटरनिख को सफलता मिली।

मेटरनिख व्यवस्था के दोष

- मेटरनिख फ्रांस की क्रांति से उत्पन्न राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, जनतंत्र की भावनाओं को दबाना चाहता था। उनकी इस अनुदारवादी नीति के चलते न केवल ऑस्ट्रिया बल्कि यूरोप के कई अन्य देशों की भी अवनति हुई।

❖मेटरनिख की अनुदारवादी नीति ऑस्ट्रिया साम्राज्य को कुछ दिनों के लिए जरूर शांत रख सका, लेकिन यह शांति लंबे समय तक नहीं चल सका, क्योंकि शीघ्र ही आंदोलन शुरू हुआ और मेटरनिख को अपना देश छोड़कर भागना पड़ा। अंततः राष्ट्रीयता और जनतंत्र की विजय हुई।

निषकर्ष

❖ मेटरनिख व्यवस्था 1815 ई. से 1848 ई. तक यूरोप पर हावी रही लेकिन अंतिम दशक में उसकी जर्जरता दृष्टिगोचर होने लगी। वास्तव में मेटरनिख ने जिस व्यवस्था का सूत्रपात किया था वह वस्तुतः तात्कालिक समय के विपरीत था। साथ ही फ्रांसीसी क्रांति से उत्पन्न उदारवादी भावनाओं को दबाए रखना मेटरनिख के लिए असंभव था, क्योंकि यूरोप की तात्कालिक राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में ऐसे तत्वों का प्रवेश हो चुका था, जिससे मेटरनिख की नीति मेल नहीं खाती थी।

❖ इन तमाम कमियां के बावजूद मेटरनिख के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। वह पहला यूरोपीय व्यक्ति था जो 1815 ई. से 1848 ई. तक यूरोप को प्रभावित करता रहा। यह महज एक संयोग था कि उसे धारा के विपरीत लड़ना पड़ा। उन्हें ऑस्ट्रियन साम्राज्य की एकता के लिए राष्ट्रवाद के विरुद्ध लड़ना पड़ा, जो कि उनकी एक नैतिक मजबूरी थी।